संस्कृत साहित्य में गीतिकाव्य का विकासक्रम एवं विषय–वैचित्य

डॉ0 सविता शर्मा
एम0 ए0, पी0एच0डी0
+2 संस्कृत शिक्षिका
म.र.द.बा.उ.वि. सीतामढ़ी

'' सत्कविरसनाशूर्पीनिस्तुषरशब्द शालिपाकेन ।
तृप्तोः दयिताधरमपि नाद्रियते का सुधा दासी।।''

गीतिकाव्य संस्कृत भारती का रमणीय अड.क है। गीतिकाव्य काव्य का वह स्वरूप है, जिसमें काव्यमयता के साथ संगीतात्मकता प्रमुख होती है। इनके पद्यों को वाद्यों के साथ गया जा सकता है। जब कवि का हृदय सुख–दुःख की तीव्र अनुभव से आप्लावित होकर अपनी रागात्मिता अनुभूति को अपनी हार्दिक भावना की पूर्णता से लय–प्रधान छंदो भय पद्यो के द्वारा व्यक्त करता है कि कविवर का भाव, गीति–काव्य के रूप में परिणित होता है। गीति की आत्मा भावातिरेक हैं। गीति–काव्य भाव प्रधान होते हैं। शास्त्रीय दृष्टि से गीतिकाव्य के खण्ड– काव्य कहा जाता है क्योंकि इनमें महाकाव्य के सम्पूर्ण गुण या लक्ष्ण नही होते हैं।
– '' खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैक देशानुसारि च। ''

गीतिकाव्य को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न रूपों में परिभाषित किया हैं। पाश्चात्य आलोचक अर्नेस्ट राइस अनुसार– ''वास्तविक

गीत वही है, जो भाव का भावात्मक विचारों का भाषा में स्वाभाविक विस्फोट है।'' महादेवी वर्मा के शब्दों में – '' सुख– दुःख की

भावावेशमयी अवस्था का विशेष गिने शब्दों में स्वरसाधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है।''

पं0 चन्द्रशेखर पाण्डेय के शब्दों में– '' मानव जीवन अन्तरात्मा के किसी एक पटल का चित्रण गीति–काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य होता है। जहाँ महाकाव्य में मानव जीवन की समग्रता का प्रसार है, वहाँ गीति–काव्य में जीवन की एकदेशीयता की तन्मयता है।
गीति काव्यों का आकार–प्रकार महाकाव्यों से छोटा है। प्रधानतया उनमें एक ही विषय वर्णित होता है– श्रृंगारिक, धार्मिक अथवा नैतिक। गीतिकाव्य में लालित्य एवं माधुर्य का विशेष पुट रहता हैं।''

सामान्यतया विषय के आधार पर तीन प्रकार के गीति–काव्य होते हैः–

1. श्रृंगारिक – श्रृंगारी गीति–काव्य
2. धार्मिक – स्त्रोत–काव्य

3. नैतिक – नीति– काव्य

गीति काव्य के दो प्रकार हैः–

1. प्रबन्धक 2. मुक्तक

पं0 बलदेव उपाध्याय ने संस्कृत गीति–काव्य के दो भेद किए है, जो सर्वजन मान्य है, वे भेद निम्न हैं।–

1. लौकिक 2. धार्मिक

लौकिक मुक्तक लोक के नाना विषयों के विधान से सम्बन्ध रखता है। धार्मिक मुक्तकों को स्त्रोत कहते हैं।

उद्भव– संस्कृत के ऋग्वेद के उषा सूक्त में, सर्वप्रथम गीति–काव्य की झलक मिलती है। इसके अनन्तर बाल्मीकि रामयण एवं महाभारत के अनेक स्थलों में गीति–काव्यात्यकता मिलती है। बाल्मीकि का श्लोकात्मक शोकोद्गार भी गीति–काव्य कहा जा सकता है। सुभाषित ग्रन्धो में पाणिनि के नाम से भी कुछ गीति–पद्य उपलब्ध है। अतः गीतियों का उद्गम स्थान वेद ही है।

लौकिक गीति–काव्य–

कालिदास– कविकुलगुरू महाकवि कालिदास कृति ऋतुसंहार''

''मेधदूतम् लौकिक गीतिकाव्य का अदिम ग्रन्थ है। कालिदास कृत'' ऋतुसंहार भी गीति–काव्य ही हैं कि रचना मानते थे पर अब अधिकांश विद्वानों ने इसे कालिदास का तरूण प्रयास मान लिया है। इसके बारे में प्रसिद्ध है– ''रचना–कौशल में प्रौढ़ता न होने पर भी ऋतुसंहार का विशिष्ट स्थान है क्योंकि संस्कृत में ऋतुवर्णन पर एकमात्र वही सांगोपांग ग्रन्थ उपलब्ध है।'' यह रचना छह सर्गो का एक छोटा–सा काव्य है। इसका प्रतिपाद्य विषय 'प्रकृति–चित्रण है। इसमें ग्रीष्म वर्षा शरद, हेमन्त, शिशिर और वसन्त ऋतुओं का क्रमशः वर्णन किया गया है। कवि काव्यारम्भ ग्रीष्म की प्रचण्डता से करता है तथा उसकी परिसमाप्ति वसन्त की सरसता और मादकता से होती है। यह कवि की प्रारम्भिक रचना है, अतः इसमें काव्य– कौशल देखना कवि के साथ अन्याय होगा, किन्तु कवि का सूक्ष्म–दर्शन प्रसाद गुण इसमें प्राप्य है। मैक्डोनल ने भी लिखा है– ''

प्रकृति के प्रति कवि की गहरी सहानभूति विशद् रंगों में चित्रित करने की कुशलता को जितने सुन्दर रूप में यह ग्रन्थ सूचित करता है, उतने में कदाचित कोई भी दूसरा ग्रन्थ नहीं करता। ''अतः ऋतु–संहार श्रृंगार काव्य की प्रथम श्रेणी हैं। उदाहरणार्थ–

''द्रुमाः सपुष्पा सलिलं सपधं स्त्रियः सकायाः पवनः सुगन्धिः
सुखाः प्रदोषाः दिवसाश्च रम्याः सर्वप्रिये चारूतंर वसन्ते।।

मेधदूतम्– इसमें सन्देह नहीं कि ऋतुसंहार से कही अधिक यशस्वी और प्रौढ कृति कालिदास कृत मेधदूतम् है। जिसमें 121 पद्यों में कवि ने यक्ष की विरहजन्य मनोदशा का मार्मिक वित्रण किया है। इस लधु कथानक के कलेवर में कवि ने देश की मनोहर रूप की माधुरी का विप्रलम्भ श्रृंगार के करूण कोमल भाव का नारी सौन्दर्य के मंजुल रूप का और हृदय के उदान्त अनुभूतियों का मार्मिक चित्रण किया है। मेधदूत के समस्त पध बड़े श्रुति–मधुर, रस–पेशल और गेयता और रमणीयता से परिपूर्ण है– उदाहरणार्थ–

'' तां जानीथाः परिमितकथां जीवितं में द्वितीयं।
दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीभिवैकाम्।।''

इसी तरह–'' पृच्छन्ती या मधुरवचनां सारिका पञजरस्थां।
कच्चिद्भर्तुः स्मरसि रसिक त्वः हि तस्य प्रियति ।।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि मेधदूतम् की भाषा अत्यंत प्रांजल, परिमार्जित और प्रवाहपूर्ण है और परिमित पदावली में भाव की विशद् व्यजंना कर देना उसका विशेष गुण है तथा अलंकारी का यथास्थान उपयुक्त नैसर्गिक चारूता का संचार कर देता है।

स्मरणीय है कि संदेश काव्य की अभिनव और मौलिक कल्पना का श्रेय कालिदास को ही दिया जाता है तथा संस्कृत में दूत काव्यों का श्रीगणेश मेधदूत से होता है। डॉ0 भोलाशंकर व्यास का स्पष्टतया मत यही है कि – '' मेघदूत न खण्डकाव्य है न करूण गीति ही, यह विषयोप्रधान भावनात्मक गीतिकाव्य है।''

डॉ0 कीथ ने इसे शोक काव्य "Elegy" मानते है। प्रो0 चन्द्रशेखर पांडेय ने कहा है कि– ''जर्मन

कवि मिलर ने अपने मेरिया स्टुअर्ट नामक नाट्यकाव्य में कालिदास के अनुसरण पर मेध द्वारा संदेश–भेजने की कल्पना की है। प्रो0 भैक्सभूलर ने 'मेघदूत' का जर्मन पद्य तथा श्टुट्ज ने जर्मन गद्य में अनुवाद किया हैं। डॉ0 एच बेक्क ने 'मेघदूत' को तिब्बती भाषा में एक संस्करण में प्रकाशित किया है। अमेरिका के आर्थर राइडर महोदय ने मेघदूत का अंग्रजी में पधानुवाद किया है''

स्पष्ट है कि मेघदूत को न केवल देश में अपितु विदेशों में भी लोकप्रियता प्राप्त है।

श्रृंगार तिलक – कहा जाता है प्रसिद्ध कवि कालिदास ने श्रृंगार–तिलक की रचना की, पर कुछ विद्वान् श्रृंगार–तिलक के रचयिता किसी कालिदास को मानते हैं। यह 23 पद्यों का एक छोटा श्रृंगार प्रधान गीति–काव्य है, इसमें सरल व प्रसादर्पूण भाषा–शैली ही व्यव्हृत हुई तथा श्रृंगार के अनेक मघुर चित्र भी विद्यमान है। यथा ––––––

'' इन्दीवरेण नयनं मुखमम्बजेन कुंन्देन दन्तधरं नवपल्लवेना

अंगानि चम्पकदलैः स विधान कान्ते कथं धटितवानुपर्लन।।''

अर्थात् सुन्दर के अन्य अव्ययों का निर्माण मृदुल कोमल कमलो से करके उसके हृदय की रचना पाषाण से पदों की गयी है ?

घटकर्पर– परम्परा–प्रसिद्धि के अनुसार घटर्कपर

कालिदास के सभकालीन और उज्जयिनी के विक्रभादित्य के नवरत्न थे। इन्होंने 22 पद्य के 'घटर्कपर' नायक गीतिकाव्य की रचना की । इसमें मेघदूत के कथानक को उलटकर विरहिणी के प्रणय–संदेश का वर्णन है। यह मार्भिक विरह–काव्य है। इसमें यत्रक अंलकार है–

'' किं कृपापि नास्ति कान्यता पाण्डुगण्डपतितालकान्तया।
शोकसागरेडद्य पातितां त्वद्गुणस्मरणभेव पातिताम्

हाल की गाथा सप्तशती– हाल की गाथा

सप्तशली महाराष्ट्री प्राकृत में रची 700 गाथाओं (आर्यछन्दों) की गीति रचना है। हाल का समय प्रथम शताब्दी हैं। मुक्तक काव्य का प्राचीनतम उदाहरण 'गाथा' सप्तशती' प्राकृत होते हुए भी लौकिक गीति–काव्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। यह श्रृंगार रस–प्रधान है। इसमें ग्रामीण जीवन का प्रणय–चित्रण तथा दाम्पत्य प्रेम की घटनाओं का मार्मिक ओर हृदयस्पर्शी चित्रण मिलता है। रीतिकालीन लोकप्रिय कवि बिहारलाल पर गाथा सप्तशती का बहुत व्यापक प्रभाव पड़ा है। उदाहरण द्रष्टव्य है–

'' ईषत्कोषविकासं यावन्नाप्नोपि मालतीकालीका।
मकरन्दपानलोलुप मधुकरं किं तावदेवमभर्दयसि।।''

भर्तृहरि– इनके तीन शतक हैं श्रृंगार–शतक

नीतिशतक और वैराग्यशतक–ये तीनों गीतिकाव्य के गुणों से परिपूर्ण है। इनका रचनाकाल पष्ठ शतक के उत्तरार्द्ध जाता है। मर्तृहरि अनुसार स्त्री का प्रत्येक कर्म और काम मोहक होता है–

''स्गितेनभावेन च लज्जयाभिया भवः पराड.मुखैरर्धकटाक्षवीक्षणैः।
व्योगिरीर्ष्याकलहेन लीलगा समस्त गाँव खलु बधनम् स्त्रियः।।

नेतिशतक में मनुस्मृति और महाभारत की गम्भीर नैतिकता कालिदास की सी सूक्ति परक प्रतिमा के साथ प्रस्फुटित हुई है–

'' साहत्यसंगीत कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छाविषाणहीनः।

तृणं न खादन्नपि जीवनानस्तद्भागधेयं परम् पशूनाम्।।

वैशग्यशतक में कवि ने कारूण्य और व्याकुलता के साथ संसार की निःसारता तथा वैराग्य की आवश्यकता समझाई गई है–तृष्णां न जीर्ण वयमेव जीर्णा विवके भ्रष्टानाम्–भवति विनिपातः शतमुखः मनसि चपरितुर्ष्ट कोडध कोदारिद्रः।''

अमरूक कवि का अमरूकशतक– अमरू अथवा

अमरूक नामक एक कवि का अमरूक–'शतक' संस्कृत साहित्य की प्रसिद्ध कृतियों से है। यह एक मुक्तक काव्य है। इस मुक्तक रचना में भाव रस और अर्थ का जितना सन्निवेश एक–एक पद में है उतना एक पूरे प्रबंध में किया जा सकता है– ''अमरूककवेरेकः श्लोकः प्रबंध शतायते। ''यह संस्कृत का श्रृंगार, रस–प्रधान लोकप्रिय गीतिकाव्य है।

मल्लर– इनका समय 8वी शती के लगभग है। इनका मुक्तक पद्यों का शतक है। भल्लारशतक के अनेक पद्या आंलकारिकों तथा सुभाषित संग्रहकारो ने संकलित किया है। इनके पद्यों में श्रृंगार के अतिरिक्त नीति उपदेश का मार्मिक बंर्मन है।

रत्नाकर – हरिविजय महाकाव्य के रचयिता

रत्नाकर (नवभी शताब्दी) का '' वक्रोक्ति पञचाशिका 'नामक 50 श्लोकों का सुन्दर वक्रोक्ति काव्य मिलता हैं।

शीलामट्टारिका– कश्मीर की कवियत्री शीला नवमी

शती में हुई। इनके सरस गीतिकाव्य को मम्मट राजशेखर आदि अंलकारिको ने बहुत मान दिया हैं। मम्मट ने काव्यप्रकाश में उत्तम काव्य का उदाहरण इनके काव्य से लिया है।

विल्हण– 'विक्रमांकदेवचरित' के रचयिता विल्हण 11वी शताब्दी के उत्त्रार्द्ध के कवि है। 50 पदों का लधु गीतिकाव्य चौरपंचाशिका '' भी इनके नाम से प्रसिद्ध है। इनका सरस वर्णन कही कही श्रृंगार का उच्श्रृंखल रूप में भी है। यधा–

अधापितां प्रणयिनीं भुगशावकांक्षी

पीयूषर्वं कुचकुम्मद्वयं वहन्तीम्।

पश्याम्यहं यदि पुनदिवसावसाने

स्वर्गपवर्गनरराज्य सुख त्याज्यामि।।''

जम्बु कवि– मेघदूत की शैली पर निबद्ध दूतकाव्यों में सबसे प्राचीन धोयी का पवनदूत ही समझा जाता था। किन्तु जैनकवि जम्बू का इससे भी प्राचीनतर चन्द्रदूत' नामक दूतकाव्य का अपूर्णरूप भी प्राप्त हुआ है। इनका समय दशवी शती का अत्तरार्द्ध है। जिनशतक का स्तुतिकाव्य भी जम्बुकवि का मिलता हैं।

धोयी– कविराज धोयी बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन 1116 ई0 के आश्रितकवि थे। इन्होने मेघदूत के सहृशपवनदूत नामक पद्यो के संदेश काव्य की रचना की। इसमें मौलिकता न होते हुए भी विरह काव्य के मनोरम वाक्य–विन्यास, कविता का स्वाभाविक प्रवाह तथा भावों का सौष्ठव अनुपम है–

''सारडगक्ष्या जनयति न यद् भस्मयादगंगकवि।
त्वद्विश्लेषे स्मरहुतवहः श्वांसधु क्षितोडपि।
जाने तस्याः स खलु नयनद्रोणिवारां प्रभावों
यद्दा शश्वन्नृप तव मनोवर्तिन शीतलस्य।।

गोवर्धनार्चाच– गोवर्धनाचार्य बंगाल के राज लक्ष्मणसेन
1116 के आश्रित कवि थे।

हाल के 'गाधा शप्तशती– के अनुकरण पर आर्यासत्तशती की रचना की जिसमें 700 आर्या छन्दो में प्रेमी–प्रमिकाओं की संयोग–वियोग की दशाओं का मंजुल एवं मार्मिक चित्र अंकित किया गया है

श्रृंगारोत्तरसन्प्रमेयश्यनैसचार्यगोवर्धी कोडपि न विश्रुतः।''

जयदेव का गीतगोविन्द– संस्कृत गीतिकाव्य की परम्परा में जयदेव की काव्यकृति गीतगोविन्द का विशिष्ट स्थान है और स्वय कवि ने गोबर्धनार्चाय व धोयी का समकालीन माना है तभी–बेगाल के राजा लक्ष्मणसेन की राज्य सभा के प्रमुख रत्न कहे जाते है गीत गोविन्द की सर्वाधिक विशेषता उसकी कोमल कान्त पदावली और ललित अनूप्रासमय छन्द है। सौन्दर्य और माधुर्य से पगाी हुई ऐसी रंचना विश्व साहित्य में दुर्लभ है। उसमें अद्भुत प्रवाह है विलक्षण शब्द सौष्ठव है। श्रृंगार रस की अभिव्यंजना के लिए जैसी भाषा उसमें पयुक्त है, वह पाठ्यमात्र से सहृदय श्रोता के हृदय में तदनुरूप भाव का संचार कर देवी है।–

''रतिसुखसारे गतभभिसारे मदनमनोहरवेशम्।
न कुरू नितम्बिनि गमन विलम्बनमनुसार तददयेशम।।
धीर समीर यमुनातीरे वसति वने वनमाली।
गोपीपीनपयोधर मदन चंचल कर युगशाली ।।

गीतगोविन्द संस्कृत का अत्यंत लोकप्रिय गीत–काव्य है। इसमें 35 से अधिक टीकाएँ लिखी गई है। भारतेन्दु हरिचन्द्र ने इसका सरस पदावली में ब्रजभाषा में अनुवाद किया है।

पण्डित जगन्नाथ– संस्कृत साहित्य में पण्डिराज के रचचिता के रूप में है पर उन्होंने गीतिकाव्य 80 ई0 के लगभग माना जाता है। एक जनश्रृति के अनुसार उन्होंने यवन युवती से विवाह किया था।

उनके रचे अनेक ग्रंधो में गंगालहरी सुधालहरी अमृतलहरी करूणालहरी आदि स्तुतिकाव्य है। भामिनी विलास पण्डितराज जगन्नाथ के मुक्तक गीतात्मक पदों का सुन्दर संग्रह है। प्रांजल पदशय्या अभिनव जलधारा तथा सुललित छन्दोयाधुर्य आदि गूण इसके गीतिकाव्य को महत्वपूर्ण बनाने वाले है यथा ''तीरे तरूण्या वदनं साहस नीरे सरोज च मिलद्विकासम् आलोक्य धावत्यु भयत्र मुग्धा मरन्दलुब्धालिकिशोरमाला।।

पण्डितराज जगन्नाथ की अन्योक्ति अनुठी एवं व्यंग्यपूर्ण है।

सुभाषित संग्रह– संस्कृत का महत्व है। हाल की गाथा– सप्तशती प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ है। कुछ सूक्ति संग्रह भी उत्तम है जैसे – कवीन्द्ररस, समुच्चय, सुभाषित पदावली सूक्ति मुक्तावली शार्डधर पद्धति, सुभाषितपदावली आदि संस्कृत का गीतिकाव्य वाड्मय का रमणीय एवं महत्वपूर्ण अंक है। इसमें लौकिक एवं श्रृंगार गीति– काव्य में सौन्दर्य एवं विलास का मार्मिक चित्रण है। संस्कृत के गीति काव्यकारी ने मन की कोमल सौन्दर्य वृत्तियों को विशेष महत्व दिया है। अतः इनकी श्रृंगार–भावना परिष्कृत है। उसमें माधुर्य का प्रार्चुय है। संस्कुत गीतिकाव्य की अन्तिम महत्वपूर्ण विशेषता उसमें प्रकृति के मनोहारी दृश्यों का नितान्त रमणीय अंकन है और उसे मानवीय भावों से सम्बद्ध दिखाकर तो कवियों ने कमाल ही कर दिया है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. कालिदासकृत मेघदूतम एवं ऋंतुसंहार

2. हाल की गााथा सप्तशती

3. भर्तृहरि का श्रृंगार शतक एवं नीतिशतक

4. अमरूक का अमरूकशतक

5. विल्हण विक्रमांकदेवचरित

6. घटकपर्र का घटकर्पर

7. हरिविजय का रत्नाकर